वसंत वैली पत्रिका

"श्रेष्ठतमाय कर्मणे"

इतिहास में शायद ही किसी भी अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालय के प्रधानाचार्य एक हिन्दी के अध्यापक रहे होंगे। ऐसी आम सोच को चुनौती देती हुई एक मिसाल हैं श्रीमान वेद व्यास जी। मॉडर्न स्कूल के प्रधानाचार्य और फ़िर हमारे अपने वसंत वैली विद्यालय के संस्थापकों में से एक, श्रीमान वेद व्यास की छवि आज भी हर दिल में आदर व सम्मान की भावना जगा देती है। सेवा निवृत्ति के पश्चात, वे वसंत वैली के साथ, प्रशासक के रूप में, बीस वर्षों से अधिक समय के लिए जुड़े रहे और उनके अनुभवों ने इस संस्था को अमूल्य सीख एवं मार्गदर्शन दिए हैं। आज हम इस लेख के माध्यम से पूरे वसंत वैली परिवार की ओर से उन्हें श्रद्धांजलि देना चाहते हैं। 4 जून 2015 को यह दिवंगत आत्मा हमारे बीच नहीं रही।

श्रीमान वेद व्यास के शिक्षण को लेकर विचार न केवल अनोखे थे, बल्कि बहुत प्रेरणात्मक भी थे। वह विद्यार्थियों की रुचि बनाए रखने में विश्वास रखते थे। जो दिशानिर्देशन बच्चों को अपने जुनून का पालन करना सिखाता है, वही सबसे अधिक महत्त्व के दर्जे पर था। हिन्दी भाषा को बढ़ावा देने का श्रेय भी उन्ही को जाता है। हिन्दी व संस्कृत के पठन - पाठन को रोचक बनाना, छात्रों की जिज्ञासा जगाना, ऐसी अनिवार्य और अधिकतर नज़रंदाज़ की गई चीज़ों पर ही वे रौशनी डालते थे। विशेष रूप से, वह हिन्दी अथवा संस्कृत व्याकरण में, विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से, रूचि और पढ़ाई को एकीकृत करने के नए तरीके खोजते रहते थे। यह तो श्रीमान वेद व्यास के बस कुछ गिने-चुने विचार हैं। ऐसे कई दृष्टिकोणों तथा योगदानों ने हमारे विद्यालय को राष्ट्र में सर्वश्रेष्ठ विद्यालय के मुकाम तक पहुँचाया है।

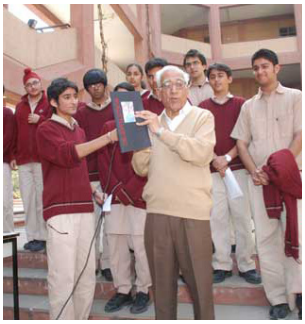

इन उपलब्धियों के अलावा श्रीमान वेद व्यास जी का व्यक्तित्व भी अद्वितीय था। वे सभ्यता और विनम्रता के प्रतीक थे। वह एक ऐसे फलदार वृक्ष थे, जो अपने गुणों के बोझ से ही झुक गया हो। जहाँ सफलता स्वयं उनके कदम चूमती थी, वहीं उनकी नम्रता उन्हें हमेशा से सबका मनपसंद बनाती थी। अहंकार को उनके जीवन में कभी कोई जगह नहीं मिली। श्रीमान वेद व्यास को काव्य-रचना, गीत तथा साहित्य का बहुत शौक था। आज भी हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों में उनके द्वारा रचित कई कविताएँ मिलती हैं।

वसंत वैली का हर सदस्य असीम गर्व के साथ कह सकता है कि हमारा विद्यालय गीत भी वेद व्यास जी की ही रचना है।

कई भाग्यशाली अध्यापक-अध्यापिकाएँ हैं जिनको श्रीमान वेद व्यास के साथ काम करने का मौका मिला। वह सभी उनके अनुशासित व दृढ़ स्वभाव के साक्षी हैं। हर छोटी से छोटी बात पर गौर फ़रमाते हुए, वह कामचोरी के सख्त खिलाफ रहते थे। कभी न कभी, हम सभी, अपने बड़ों या गुरुओं को देखते ही, उनके डर और इज़्ज़त से, पीठ सीधी किए चौकन्ने हो जाते हैं। वेद व्यास जी एक ऐसे व्यक्ति थे, जिनको देखकर बड़े से बड़ों की, हमारे प्रधानाचार्य की भी, पीठ सीधी हो जाती थी तथा सिर आदर से झुक जाता था।

हमारा विद्यालय गीत वेद व्यास जी की ज़िन्दगी के अहम मूल्यों का दर्पण है। सचमुच, उसके तीन शब्द उनकी बेजोड़ मिसाल को कायम रखते हैं - **श्रेष्ठतायकर्मणे।**

निकिता धवन, ११

स्कूल पॉच

वसंत वैली अन्तर विद्यालय प्रतियोगिता २०१५	तृतीय स्थान: मदर्स इंटरनेशनल स्कूल
मन का शरीर की तरह उपयोग करो.	टेक-ओ-बाईट
प्रथम स्थान: वसंत वैली स्कूल	प्रथम स्थान: दिल्ली पब्लिक स्कूल, वसंत कुंज
द्वितीय स्थान: मेयो कॉलेज गर्ल्स, अजमेर	द्वितीय स्थान: वसंत वैली स्कूल
तृतीय स्थान: सेंट मैरीस स्कूल	तृतीय स्थान: स्प्रिंगडेल्स, धौला कुआँ
गेम-ओ-माटिक	गणित प्राइज टेस्ट
प्रथम स्थान: वसंत वैली स्कूल	१ प्राइज:
द्वितीय स्थान: चिन्मय विद्यालय	कक्षा ६- आरुष शाह
तृतीय स्थान: सेंट मैरीस स्कूल	कक्षा ७- सिद्धांत गांधी
	कक्षा ८- रोहित बहल
	कक्षा ९- विराज जिंदल
	कक्षा १०- दिविज चांदना
पिक्सेल-ओ-ग्राफ़िक	कक्षा ११- निकिता धवन
प्रथम स्थान: वसंत वैली स्कूल	कक्षा १२- रिकी टी. जॉर्ज
द्वितीय स्थान: टैगोर इंटरनेशनल, वसंत विहार	

सावन कितना मनभावन

ज्येष्ठ-आषाढ़ ने तपा दिया है
सुन्दर प्यारी धरती को
आरे बादल कारे बादल
चाह तुम्हारी धरती को।
बीते पल बीते महीना
आया सावन झूम के।
इठलाती बलखाती बदरिया
धरती माँ को चूमके।

नई कोंपले नई हरियाली
इंद्रधनुष की छटा सुहावन।
नाच-नाच कर मोर है कहता
सावन कितना मनभावन।

पायल की छम-छम पानी की बूँदों से
बनती नहर व झील सरों वर।
हिलमिल कर जन गाते सावन में
मदिरालय से दिखलाते करों वर।

गाँव शहर सब डूबा हुआ है
डूबा हुआ है सबका आँगन।
फिर भी दिल ये कहता है
सावन कितना मन भावन।

अनाहिता जैन ४ अ

नीली चिड़िया

न है वो हरी या काली,
नीली है वो; खूब सयानी।
आकर जुंडी से लेती है पानी,
कार्निस पर नीले पंख छोड़ जाती।
सुरीली आवाज़ में गाना गाती,
मुझे तो यह बहुत भाती!

-करीना गोयल व आयज़रा

४ दिन के लिए मुंबई के मांसाहारी बनेंगे शाकाहारी !

शायद आपने पढ़ा या सुना होगा कि मुंबई में बृहतमुंबई म्युनिसिपल कारपोरेशन ने ऐलान किया है कि जैन धर्म के पर्युषा दिनों में मुंबई में मांस की बिक्री पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है । जब मैने यह खबर सुनी तो मैं दंग रह गया। पहले मैं इस बात पर विश्वास नहीं कर रहा था परन्तु सभी टीवी चैनलों पर यही खबर दिखाई जा रही थी तो मुझे यकीन हो गया कि यह कोई अफवाह नहीं थी।

भारत एक धर्म निरपेक्ष देश है। पर एक जैनी त्यौहार के कारण मांस की बिक्री बंद करने से हम धर्म निरपेक्षता का उलंघन कर रहें हैं । हमारे देश में मांस खाना एक गुनाह तो नहीं है और भारत में अधिक्तर लोग मांसाहारी हैं।सरकार को किसी एक धर्म से जुड़ कर निर्णय नहीं लेने चाहिये। क्या यह निर्णय अस्थायी है या स्थायी है और ऐसा करने के क्या लाभ या हानियां हो सकती है ? सरकार को इन प्रश्नो पर सोच विचार कर यह निर्णय लेना चाहिए था। मैने बहुत ढूंढा परन्तु मुझे इन प्रश्नों का कोई स्पष्ट उत्तर नहीं मिला। ऐसा कहा जा रहा है सरकार ने यह कदम सिर्फ जैन धर्म के लोगों को खुश करने के लिए उठाया था।

अगर सरकार भारत में हर धर्म का पालन करते हुए अपने निर्णय लेने लगी तो हिन्दू, मुस्लमान, सिख, ईसाई, जैन आदि धर्मो का अनुसरण करना पड़ेगा। मेरा मानना है कि ऐसा करने से क्या प्रतिदिन सरकार हमें बताएगी कि हमें क्या खाना है व क्या पहनना है ।

रोहिल बहल ८ – ब

चुटकुले

1. एक परीक्षा में प्रश्न था, चैलेंज कैसे किया जाता है?
छात्र ने पूरा पेज खाली छोड़ दिया और नीचे लिखा, दम है तो पास करके दिखाओ।

2. टीचर छात्र से - तुम स्कूल लेट क्यों आए?
छात्र - सड़क पर एक आदमी का नोट गुम हो गया था।
टीचर - अच्छा, तो तुम उसकी मदद कर रहे थे।
छात्र - नहीं, मैं वहां से उसके जाने का इंतजार कर रहा था। नोट मेरे पैरों के नीचे जो था।

3. गबरू - यार, मैं सोचता था कि इस दुनिया में सिर्फ मैं ही बेवकूफ हूं।
झबरू - क्यों, क्या हुआ?
गबरू - कल मैंने अपनी पत्नी को कश्मीरी सेब लाने को कहा था।
झबरू - तो क्या हुआ?
गबरू - आज कश्मीर से पत्नी का फोन आया कि उसने सेब खरीद लिए हैं।

4. बंता को सुबह-सुबह उनकी ममी ने उठाया और कहा: उठो बेटा, 5 बज गए हैं। तैयार हो जाओ, स्कूल जाना है न!
बंता: नहीं, मैं स्कूल नहीं जाऊंगा!
बंता की ममी: चलो, मुझे कोई 2 कारण बताओ स्कूल न जाने के।
बंता: सारे बच्चे मुझसे चिढ़ते हैं और सारी टीचर्स भी मुझसे नफरत करती हैं।
बंता की ममी: चलो, बहाने मत बनाओ और जल्दी तैयार हो जाओ।
बंता: चलो, आप मुझे कोई 2 कारण बताओ स्कूल जाने के।
बंता की ममी: पहला तो यह कि तुम 42 साल के हो और दूसरा यह कि तुम स्कूल के प्रिंसिपल हो!

आकिब इरफ़ान

एडिटर्स कांफ्रेंस (ग्वालियर)

पिछले दिनों सिंधिया स्कूल में एडिटर्स कांफ्रेंस २०१५ बहुत ही मज़ेदार अनुभव था। कोन्फेरेंस का आरम्भ बड़े धूम धाम से हुआ। सिंधिया विद्यालय के छात्रों ने हमारे लिए नाच गाने का प्रदर्शन किया। पहले दिन हम पाँच अपनी अध्यापिका व दूसरे छात्रों के साथ १२ समूह में बांटे गए।

उसके पश्चात हमने अगले तीन दिनों में ग्वालियर शहर की झलक देखी। हम सबने अपने सूचना पत्र के लिए समाचार, फ़ोटो, चित्र एकत्र किए और फिर साथ बैठकर उनका संकलन किया। इस दौरान कुछ माननीय वक्ताओं ने हमारा उत्साह बढ़ाया और हमे प्रेरणा दी। इस पूरे अनुभव से हमने बहुत कुछ सीखा। इसके साथ ही हमारा मिलन अपने जैसे कई सारे संपादको के साथ हुआ। इससे हमारा ज्ञान बड़ा और हमने नए दोस्त भी बनाए। क्योंकि यह एडिटर्स कांफ्रेंस प्रतियोगिता नही थी, अनुभव और समृद्ध बना। बोर्डिंग स्कूल का महौल भी विभिन्न था। सन २०१५ हमारी यादों में हमेशा रहेगा। ऐसा सुनहरा मौका, हम कभी भी नही भूल सकते है।

अनन्या जैन, सरीना मित्तल

मनुष्य की अंतरिक्ष में एक और विजय

हाल ही में अंतरिक्ष यान न्यू होराइज़न्स ने यम अथवा प्लूटो तक का सफर सफलतापूर्वक तय किया। इस बौने ग्रह के विषय में काफी चर्चा होती आ रही है। अगस्त २००६ में प्लूटो से सौरमंडल के नौवे ग्रह होने का दर्जा छीन लिया गया। वास्तव में, जब इस मिशन की शुरुआत में न्यू होराइज़न्स यान धरती से रवाना किया गया था, उस समय प्लूटो की पहचान एक ग्रह के रूप में ही थी। परन्तु, इसके कुछ ही महीनों बाद, अंतराष्ट्रीय एजेंसी इंटरनेशनल एस्ट्रोनॉमिकल यूनियन में ग्रहों की उचित परिभाषा को लेकर बेहेस छेड़ दी गई। और आज इसका नतीजा एक आठ ग्रहों वाला सौरमंडल है। आधिकारिक तौर पर प्लूटो अब 'एस्ट्रॉएड नंबर 134340' के नाम से जाना जाता है।

इस अभियान की सफलता के साथ, अब धरती से भेजे गए यान सौर मंडल के हर ग्रह (या भूतपूर्व गृह) तक कम से कम एक बार पहुँच चुके है। भेजे गए यान से प्लूटो की कई तस्वीरें खींचकर धरती पर भेजी गई हैं। इस उपलब्धि के साथ, हमें प्लूटो के बारे में बहुत सी रोचक जानकारियाँ प्राप्त हुई हैं। इनमें शामिल हैं इस बौने गृह का नाप, गति और विभिन्न भौगोलिक पहलू। वैज्ञानिकों को अब कई प्रश्नों के उत्तर व गलतफैमियों की सच्चाई हासिल हुई है। उदाहरण के तौर पर, न्यू होराइज़ंस ने प्लूटो का व्यास 2,370 किलोमीटर बताया है जबकि पहले इसका व्यास 2,300 किलोमीटर माना जाता था। इसके अलावा भी वैज्ञानिकों की इस ग्रह के अध्ययन में हमेशा से ही विशेष रुचि रही है। प्लूटो के बाहरी आकार में हाल ही में हुए परिवर्तन एवं उसके लाल रंग में बहुत बदलाव देखा गया है। नासा का मानना है कि सन् २००२ और २००३ में ही यह बदलाव आए हैं।

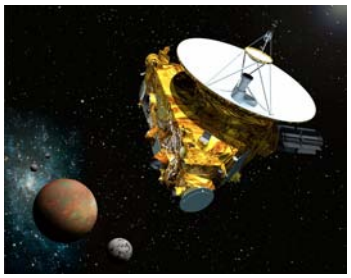

यम बौना ग्रह का यह अभियान अभी समाप्त नहीं हुआ है। इस वक्त भी अध्ययन और जाँच का सिलसिला जारी है। प्लूटो के बाद यह यान क्वीपर बेल्ट जाएगा और २०२० तक इससे जुड़ी जानकारियाँ जुटाएगा। आधिकारिक रूप से यह अभियान २०२६ में पूरा होगा। सभी की यही आशा बनी रहेगी कि उस समय, मनुष्य के लिये अंतरिक्ष के कई और दिलचस्प रहस्य खुल जाएँगे।

- निकिता धवन 11 ब

मैं कौन हूँ?

मैं लेखनी हूँ और सबकी प्रिय हूँ। मैं ही ज्ञान विज्ञान की बातो को लिखने का काम करती हूँ। मेरी अनुपस्थिति में ज्ञान विज्ञान की बातो को कोई नही जान सकता है। इतिहास की जानकारी मेरे द्वारा ही वर्त्तमान तक पहुंचती है। आज कल छात्र मेरा प्रयोग अनेक रूपों में करते है। मैं पत्रकारों की,अध्यापिकाओ की ,छात्रों की,लेखको की सबसे प्रिय हूँ। यह मुझे हर समय अपने सीने के पास रखते है। मैं इनका सबसे बड़ा हथियार हूँ।

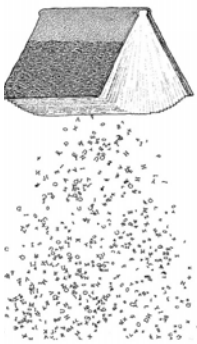

जैसे - जैसे दुनिया में बदलाव आया है ऐसे ऐसे मेरा रूप भी बदल गया है। मेरा जन्म तो लकड़ी से हुआ था और आज कल मुझे अनेक प्रकार के आकार तथा रंग दे दिए गए है। अब तो इंक की बोतल को भी रखने की जरुरत नहीं होती है। आज कल वैज्ञानिक ऐसी दवात बनाने की कोशिश कर रहे है जिससे किसी को भी असुविधा न हो। मेरे रूप में अनेक और अनोखे परिवर्तन लाने की कोशिश जारी है। मैं लोगो के लिए अनेक भाव व्यकत करने का माध्यम हूँ। मेरी यह आशा है कि मैं हमेशा सबकी प्यारी बनी रहूँ और पीढ़ियों को आपस में जोड़ती रहूँ ।

- आनवी गुप्ता ,अनाहिता महाजन ७ - अ

'तन और मन को एक समान माने'

4 सितम्बर को 'तन और मन को एक समान मानें' इस विषय पर छः विद्यालयों के छात्रों ने 'मल्टी -मीडिया कोन्टेस्ट' के अन्तर्गत अपने चलचित्र प्रस्तुत किये।आजकल मानसिक स्वास्थ्य पर चार विमर्श का अहम विषय है। इस संदर्भ में अधिकतर समस्याएँ सामाजिक अनभिज्ञता के कारण पैदा होती हैं। सभी चलचित्रों ने इन समस्याओं और उनके समाधान व समाज के उत्तरदायित्वों पर प्रकाश डाला।

'न्यू एरा पब्लिक स्कूल' के चलचित्र ने अस्वस्थ मानसिक हालत के कारणों तथा लक्षणों को उदाहारणों की सहायता से उभारा। इस चलचित्र में मानसिक समस्याओं के प्रति समाज की मिथ्या सोच व भ्रान्त धारणाओं का विवरण है।

'साधू वासवानी' स्कूल के छात्रों ने खिन्नता, चिंता और उदासीनता के व्यतिगत विस्तार का विवरण देते हुए यह कहा कि समाज को एसे व्यक्तियों के साथ सम्वेदना व सहानुभूति का व्यवहार करना चाहिये। यह चलचित्र सामाजिक अनभिज्ञताओं पर भी केंद्रित है।

'सिन्धिया' स्कूल के छात्रों का मानना है कि समाज खिन्नचित्तता और उदासीनता को एक कलंक के नज़रिये से देखता है। इस चलचित्र में सामाजिक सहयोग के महत्त्व पर ज़ोर डाला गया है। सामाजिक अलगेलना को अस्वस्थ मानसिक हालत का प्रमुख कारण बताते हुए 'टैगोर इन्टरनैशनल स्कूल' के छात्रों ने कहा कि इस समस्या का हल तभी हो सकता है जब समाज अपना दृष्टिकोण बदले। समाज अभी इनको पथभ्रष्ट तथा व्यथित विकारों के नज़रिये से देखता है।

'द मदर्स इन्टरनैशनल' की प्रस्तुति में एक सामजिक सर्वेक्षण के आधार पर समाज की दृश्य दृष्टि का विश्लेषण किया गया । मानसिक अस्वस्थता से पीडित लोगों को समाज पागल, सनकी, अजीब, बेवकूफ ,भयानक, व्याकुल व कई ऐसे नामों से पुकारते हैं। इस व्यवहार से इन व्यक्तियों की मानसिक स्थिति और उनके सोचने की क्षमता पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

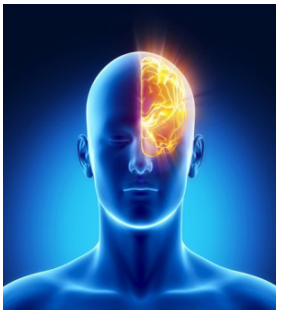

'सरदार पटेल विद्यालय' की प्रस्तुति में दर्शाया गया कि समाज का दृष्टिकोण उनकी अपनी सोच पर टिका है। अस्वस्थ मानसिकता से जूझते व्यक्तियों को ध्यान केन्द्रित करने मे अधिक कठिनाई होती है व उनके सोचने की क्षमता भी कमज़ोर होती है।जो बच्चे इस स्थीत में होते हैं वह अधिकतर समाज से छुपते हैं और उनके लिये इस स्थिति का सामना करना बहुत कठिन होता है।

इन सभी चलचित्रों से एक बात उभार कर आती है वह यह कि मानसिक अस्वस्थता की ओर समाज को जागरूक करना और संवेदनशील बनाना अति आवश्यक है।वसंत वैली स्कूल की प्रस्तुति में दर्शाया गया कि हमारे आस पास बहुत लोग है जो मानसिक रूप से विकलांग हैं।यह दिखाया गया था कि हमें भेद भाव नहीं करना चाहिए।

राबिया गुप्ता, ९

ड्रामा फैस्टिवल साक्षात्कार इंटरव्यू

प्रश्न 1 आपको हमारे ड्रामा फैस्टिवल में हिस्सा लेकर कैसा लगा?
उत्तर हमें बहुत अच्छा लगा क्योंकि यह थीम 'हँसे तो फँसे' बहुत पसंद आई। वसंत वैली स्कूल – महक आनंद
ड्रामा फैस्टिवल में हिस्सा लेकर अच्छा लगा। ड्रामा द्वारा हमारा आत्मविश्वास बढ़ा। मॉडर्न स्कूल – संतुष्ट आर्यनवीर
यह हमारा पहला अनुभव था और बहुत अच्छा लगा। सरदार पटेल स्निग्धा व अनंत

प्रश्न 2 क्या आपको हमारी थीम हँसे तो फँसे पसंद आई?
उत्तर हमें बहुत पसंद आई क्योंकि हँसी हमें अच्छी लगती है। वसंत वैली स्कूल – कृष दहिया

प्रश्न 3 आपकी राय में क्या यह ऑडिटोरियम इस प्रदर्शन के लिए अच्छा है?
उत्तर यह बिल्कुल ठीक है क्योंकि यह ऑडिटोरियम बड़ा है और कुर्सियाँ आरामदायक हैं। आदि नायर – वसंत वैली स्कूल
ऑडिटोरियम इस प्रर्दशन के लिए अच्छा है। हॉल बहुत साफ और बड़ा है। एयर कंडिशन्ड भी है। विश्वदीप सिंह – डी पी एस वसंत कुंज

प्रश्न 4 अगली बार की थीम क्या होनी चाहिए?
उत्तर – कभी हार न मानो । छाया पॉमियर – वसंत वैली स्कूल
– जल ही जीवन है। स्टेप बाय स्टेप
– पर्यावरण बचाओ सरदार पटेल
– रोए तो फँसे। शिव नाडर स्कूल– तनीशा माथुर

प्रश्न 5 आप अगले साल के लिए ड्रामा फैस्टिवल को बेहतर बनाने के लिए कुछ सुझाव देना चाहेंगे ?
उत्तर नही, यहाँ सब कुछ अच्छा था। वीर अमोल – शिव नाडर स्कूल
हर नाटक का परिचय पहले देने का मौका मिलना चाहिए ताकि दर्शकों को होने वाले नाटक की थोड़ी जानकारी मिल सके । श्रीराम स्कूल

प्रश्न 6 इस ड्रामा फैस्टिवल की क्या चीज़ सबसे पसंद आई ?
उत्तर सजावट और पेंटिंग बहुत अच्छी लगी। स्टेज पर ड्रामा करने का मौका मिला। एअर फोर्स स्कूल

प्रश्न 7 आपको अपना नाटक बनाने में कितना समय लगा और कितने घंटे व दिन तैयार करने में लगे ?
उत्तर हमारे नाटक को बनने में चार हफ्ते लगे । हम एक दिन में डेढ़ घंटे अभ्यास करते थे। श्रीराम स्कूल – भरत वाधवानी

प्रश्न 8 आपके विचार में नाटक उत्सव होने चाहिए या नाटक प्रतियोगिता ?
उत्तर यह एक उत्सव ही होना चाहिए क्योंकि हम सब अपना कार्य अच्छी तरह प्रस्तुत कर सकते हैं । सरदार पटेल – काम्या गुप्ता

प्रश्न 9 नाटक करते समय किन किन मुश्किलों का सामना करना पड़ा ?
उत्तर नाटक करते समय मुझे थोड़ी परेशानी अपने कपड़े के अंदर तकिया डालकर पेट मोटा करने में हुई। वसंत वैली स्कूल –आदि नायर
नाटक करते समय बहुत मज़ा आया क्योंकि जब कोई संवाद भूल जाता तो दूसरा बोल देता। श्रीराम स्कूल

प्रश्न 10 नाटक करते समय कैसा महसूस किया ? गलती हुई तो कैसे सम्भाला ?
उत्तर नाटक बनाने के दौरान एक बच्चे ने गलती से मेरा चश्मा तोड़ दिया। हम बार – बार अपनी लाइन भूल रहे थे लेकिन एक दूसरे को याद दिला रहे थे । वसंत वैली स्कूल – इनायत पासी

प्रश्न 11 क्या नाटको के बीच नाच गाना होना चाहिए ?
उत्तर हमें लगता है नाच गाना होना चाहिए। उसका अपना अलग ही मज़ा है। सरदार पटेल स्कूल – प्रखर शर्मा

साक्षात्कार टीमः वीर अनमोल. सार्थक खोसला. कृष्णदेव अग्रवाल. सनां मेहरा अनिरूद्ध वत्स गौरांग डेका विश्वदीप सिंह और शाएला उपाध्याय

किताबें

किताबें मेरी सबसे प्रिय सहेली
इनमें मुझे हर बार मिलती एक नई पहेली।
कुछ कहानियाँ होती हैं रोमांचक
और कुछ होती हैं मज़ेदार।
हर किताब में होते हैं मज़ेदार किरदार
इसलिए मैं पढ़ती हूँ
नई किताबें बार बार।
किताबों की दुनिया है बहुत निराली
इनका कोष न होता खाली

सुमाया बेरी चार – ब

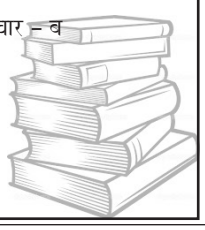

पेड़

पेड़ हमें देते है छाया
तूफ़ानों से हमें बचाया ।
पक्षी इनपर बनाते हैं घर
सुंदर फूल खिले हैं इनपर।
पेड़ बहुत लगते हैं सुंदर
बच्चे चढ़ते जैसे बंदर।
तोड़ – तोड़ कर फल हैं खाते
माली को हैं बहुत दौड़ाते।
सावन आता घुमड़ – घुमड़ कर
मोर नाचते छम – छम दिन भर।
क्या होते ऐसे यह नज़ारे
अगर न होते पेड़ यह सारे।

अनिरूद्ध वत्स चार – ब

पटेल आरक्षण

भारत एक ऐसा देश है जहाँ हर दिन किसी नई कहानी की शुरूआत होती है। कुछ महीनों पहले हम में से किसी ने हार्दिक पटेल का नाम भी नहीं सुना होगा। परंतु अब जो व्यक्ति उन्हें नहीं पहचानता वह बेखबर कहलाया जाता है। पिछले कुछ दिनों में गुजरात में हुए जलूस का कारण वही हार्दिक पटेल हैं और मेरी राए में उनका ऐसा करना बिल्कुल निराधार था। उनकी मांग क्या थी? पटेल जाति के लिए आरक्षण।

सबसे पहले हमें यह समझने की ज़रूरत है कि देश में किसी भी जाति को आरक्षण क्यों दिया जाता है। आरक्षण देने का आधार या तो आर्थिक या फिर सामाजिक होता है और यह आरक्षण अलग स्तिथियों में अलग माध्यमों से दिया जाता है।कुछ जातियों को आरक्षण चुनाव के दौरान आरक्षित मतदाता क्षेत्रों द्वारा दिया जाता है तो कुछ जातियों को आरक्षण विश्वविद्यालयों में आरक्षित सीटों द्वारा दिया जाता है। हार्दिक पटेल पटिदार या पटेल जाति का एक हिस्सा हैं और वह चाहते हैं कि उनकी जाति को शिक्षा और सरकारी नौकरियों में आरक्षण मिले।वह ऐसा इसलिए मानते है क्योंकि उन्हें लगता है कि पटिदार जाति की ज़मीने कम होती जा रही हैं और इस जाति को बढ़ावा देने के लिए आरक्षण देना आवश्यक है।

मैं उनकी इस बात से बिल्कुल सहमत नहीं हूँ। सभी जानकारी देने वाले चैनल और समाचार पत्र हमें यही बताते हैं कि पटिदार या पटेल जाति के लोग न केवल अनुसूचित जाति के लोगों से बल्कि अन्य लोगों से भी ज़्यादा अमीर हैं। यहाँ तक कि गुजरात की मुख्यमंत्री आनंदीबेन पटेल भी उस ही जाति का एक हिस्सा हैं। इसलिए मेरा मानना है कि पटेल जाति को आरक्षण नहीं मिलना चाहिए और हार्दिक पटेल जैसे लोगों को परिश्रम से नाम कमाना चाहिए।

काम्या यादव 11

इंटरनेट लत

"वह बहुत विचलित हो गया है। " चिंतित पिता ने कहा। "उसके अंक धीरे धीरे नीचे गिरने लगे हैं ।" एक चिंतित माता ने कहा। पर यह उदाहरण सिर्फ़ भारत में ही नहीं पर पूरी दुनिया में दिखाई देताहै। आजकल दुनिया मे हर बच्चे को इंटरनेट की लत लग गई है ।यह हमारे शरीर के लिए ही नहीं पर हमारे दिमाग़ के लिए भी बहुत बुरा है।

जब हम इंटरनेट पर होते हैं हमारा दिमाग चलना बंद कर देता है जो बहुत हानिकारक है। इंटरनेट पर होने के अलावा हम पढ़ सकते हैं, खेल सकते हैं एवं अपने परिवार के साथ भी वक़्त बिता सकते हैं। इसी वजह से मेरे पिछले परिणाम में मैंने अच्छा नहीं किया, तो आप ख़ुद ही अपने आप को सुधार सकते हैं, और वही नहीं अपनी ज़िंदगी में आप और बेहतर कर सकते हैं।

कार्तिक श्रीवास्तव

क्या आप जानते हैं

1. कैलिफोर्निया: तितली को मारने,की सज़ा जेल है।

2.वर्जीनिया: सभी बाथटब घर के अंदर नहीं,बलकि बाहर होने चाहिए।

3.टर्की: सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी में,कॉफी पीने की सज़ा मौत थी।

4.स्विट्जरलैंड: अपनी गाड़ी के दरवाज़े को ज़ोर से बंद करना एक अपराध था।

5. सिंड्रेला की कहानी चीन में बनाई गयी थी।

6. 1972 में पहला ईमेल भेजा गया था।

7. दक्षिण ध्रुव उत्तरी ध्रुव से अधिक ठंडा है।

8. स्वीडन में हर साल एक होटल बर्फ से बनाया जाता है।

9. चूविंग-गम में रबर होता है।

अरमान नाथ 10

ज़रा सोचिए

हिंदी, एक भाषा जो दुनिया में सबसे ज़्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है, करीब ३१ करोड़ वक्ताओं के साथ, हमारे देश की आधिकारिक भाषाओं में से एक है और हमारी भारतीय संस्कृति का बड़ा हिस्सा भी है,

आजकल हिंदी अनेक प्रकारों में हमारे सामने है। जैसे :

१. विद्यालयों में सिखाई जाने वाली हिंदी

२. सरकारी कार्यालयों में इस्तेमाल की जाने वाली हिंदी

३. अनौपचारिक प्रकार की हिंदी जो दुकान, बाज़ार आदि जगहों में इस्तेमाल होती है

४. टी-वी और फ़िल्म मे इस्तेमाल की जाने वाली हिंदी

५. न्यूज़ और अख़बार में इस्तेमाल की जाने वाली हिंदी

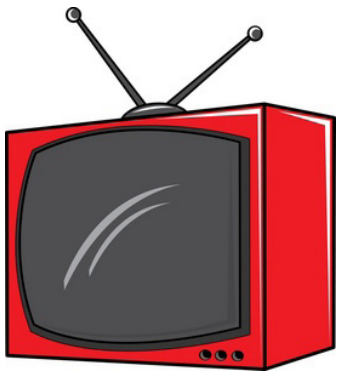

हम जिस तरह की भी हिंदी बोलते है, हिंदी भाषा और उसकी संस्कृति को जीवित रखना हमारा कर्तव्य है।

फिर भी हम अपनी राष्ट्र भाषा हिंदी का सम्मान क्यों नहीं करते? उसमें ऐसी क्या बुराई है कि हम उसको छोड़ कर हमेशा अंग्रेजी का इस्तेमाल करते है? हमें अपनी राष्ट्र भाषा इस्तेमाल करने से क्यों शर्म आती है? हमें अपनी राष्ट्र भाषा पर गर्व होना चाहिए। सब देशवासियों को अपनी राष्ट्र भाषा पर गर्व होना चाहिए। मेरा लक्ष है कि मैं भारत की मिटटी से बने हर देशवासी को अपनी राष्ट्र भाषा पर गर्व महसूस हो। मैंने हमारे विद्यालय में ऐसा बहुत देखा है कि सभी विद्यार्थियों को हिंदी भाषा से चिढ़ होती है। ऐसे क्यों , क्यों , क्यों होता है?

जय जगन्नाथ, प्रार्थना बत्रा

प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १. निम्नलिखित दक्षिण एशिया के राज्यों में किसका जीडीपी पर कैपिटा सबसे ज़्यादा है?

(क)भारत
(ख)बांग्लादेश
(च)श्री लंका
(छ)मालदीव्स

प्रश्न २. किस देश ने तकरीबन १००० सिपाहियों को यमन के अंदर शिया होथि आतंकवादियों से लड़ने को भेजा है?

(क)ओमान
(ख)क़तर
(च)यूएई
(छ)सऊदी अरबिया

प्रश्न ३. किसने २०१५ का इटालियन ग्रौं प्री जीता?

(क)सेबेस्टियन वेटेल
(ख)निको हुल्केनबर्ग
(च)फेलिप मास्सा
(छ)लूईस हैमिलटन

प्रश्न ४. भारत का हिमाद्रि स्टेशन कहाँ है?

(क)आर्कटिक
(ख)अंटार्कटिक
(च)हिमाद्रि पहाड़ो
(छ)ईस्टर्न घाट

प्रश्न ५. भरत ने कौनसी कोस्ट गार्ड शिप श्री लंका को तोहफे के रूप में दी है ?

(क)वरहा
(ख)सिंधुकीर्ति
(च)अरिहंत
(छ)विक्रांत

शुभम कलंत्री, ८

उत्तर: 1 (छ)मालदीव्स 2 (ख)क़तर 3 (छ)लूईस
4 हैमिलटन 5 (क)आर्कटिक 6 (क)वरहा

मांझी: द माउंटेन मैन

निर्देशक : केतन मेहता
वर्ष :२०१५
अभिनेता : नवाज़ुद्दीन सिद्दीकी
अंक: ★★★★

मांझी, बिहार के एक छोटे से गाँव में रहने वाला आम आदमी था। परन्तु जब एक दिन उसकी पत्नी की पास वाले पहाड़ पर चढ़ने के दौरान मृत्यु हो गई, उसकी पूरी ज़िन्दगी पलट गई। उसके मन में एक नया लक्ष्य पैदा हुआ। वह पहाड़ तोड़ने निकल गया, और एक नया रास्ता बनाने में जुट गया। लोगों ने उसे ताने मारे, उसका मज़ाक बनाया परन्तु मांझी का उत्साह काम नहीं हुआ। वह बिना रुके आगे बढ़ता गया।
एक बेहतरीन फिल्म, जो दिलों को छू गई और मनों को प्रेरणा दे गई, मांझी असली घटनाओं पर आधारित है। इस के द्वारा, निर्देशक ने कई नए मामलों की ओर दर्शकों का ध्यान आकर्षित किया है। एक परिश्रमी आदमी की कथा होने के आलावा यह भेद भाव, जात-पात का अंतर एवं और कई राजनैतिक, सामाजिक मुद्दों के बारे में लोगों को बताती है।
नवाज़ुद्दीन सिद्दीकी ने मांझी का किरदार निभाने में कोई कमी नहीं की है। केतन मेहता ने दशरथ मांझी को एक सच्ची श्रद्धांजलि दी है।

अनन्या जैन १०

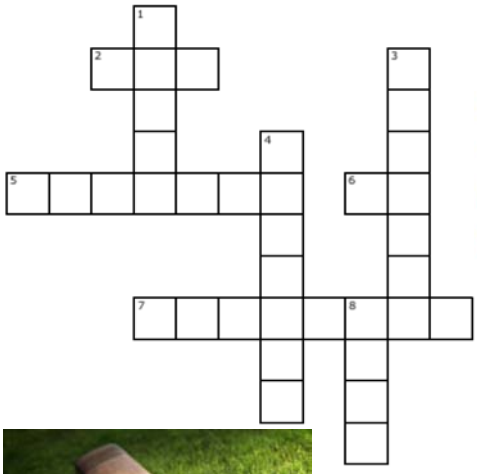

वर्ग पहेली

1. नोबेल प्राइज जितना वाला पहला भारतीय कौन था ?
3. ताज महल इस पत्थर से बना है
4. यह बनारस का एक और नाम है
8. भारत की सबसे लम्बी नदी
2. दुनिया का सबसे उचा क्रिकेट मैदान कहा है ?
5. हमारे झंडे में कौनसा रंग हिम्मत और त्याग का प्रतिक है ?
6. भारत दुनिया में इस फल का सबसे बड़ा उत्पादक है
7. हिंदी इस लिपि में लिखी जाती है

उत्तर

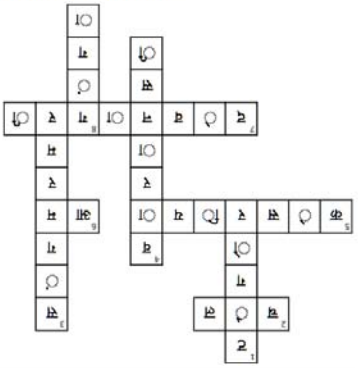

वी-वीं आई क्यू
लोहपथ गामिनी का क्या अर्थ है ?

जब आदमी को घुटन महसूस होती है। - राहुल जेरथ
हाँ हाँ, यह तो एक एन जी ओ का नाम है ! - यशस्विनी जिंदल
एक बॉलीवुड अभिनेत्री जिसकी फिल्म कोई नहीं देखता। - अर्जुन वीर कपूर
क्या यह एक दुकान का नाम है ? - गुरलीन बादल
यह तो तेरहवी राशि चक्र है। - नूर ढींगरा

लोहपथ गामिनी का सरल अर्थ रेलगाड़ी या ट्रैन है !

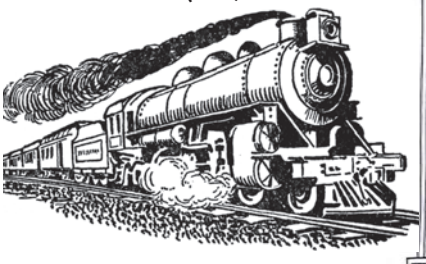

रीया कोठारी, 11

संपादक समिति

आर्यन साध, साहिल कुमार, राबिया गुप्ता, अदिति सिंह, आरुषि भूतानि, इशिता मल्होत्रा, ज़ोया हस्सन, आदित्य कपूर, असीस कौर, जय जग्गनाथ, अनन्य जैन, काम्या यादव, निकिता धवन, रिया कोठारी, सरीना मित्तल, ऋषभ चटर्जी, साइशा सेठी, सरीना नंदा, अरमान पूरी

मुख्य संपादक : नूर ढींगरा